

जनपद मुरादाबाद में जनसंख्या वृद्धि, कृषि विकास एवं उसका पर्यावरण पर प्रभाव— एक भौगोलिक अध्ययन

डा० मनोज कुमार सिंह ✉

प्राचार्य लक्ष्य पी०जी० कालेज, स्यौहारा, बिजनौर, उ०प्र०

शोध सार

जनसंख्या वृद्धि, कृषि विकास एवं पर्यावरणीय समस्याएँ भारत सदृश राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण भौतिक आर्थिक एवं सामाजिक समस्याएँ हैं। इसके अध्ययन से कृषि विकास तथा उस पर आश्रित जनसंख्या तदोपरान्त पर्यावरणीय समस्याओं का अन्तर्सम्बन्धों का विश्लेषण आसानी से किया जा सकता है। कृषि तथा जनसंख्या विकास का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है अधिकांश जनसंख्या के कृषि कार्य में संलग्न रहने से क्षेत्र विशेष में उपलब्ध कृषि पर जनसंख्या का दबाव निरन्तर बढ़ता रहता है जो भविष्य की एक भयावह समस्या का सूचक होता है। क्षेत्र में पर्यावरण में निरन्तर गिरावट देखने को मिलती है। अतः इस समस्या के समाधान हेतु क्षेत्रीय स्तर पर कृषि एवं जनसंख्या अनुपात से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों का समालोचनात्मक भौगोलिक विश्लेषण कर पर्यावरणीय समस्याओं का निराकरण एवं कृषि विकास पर जनसंख्या के वास्तविक दबाव तथा कृषि विकास की वरीयता का मूल्यांकन कर उन पर जनसंख्या का दबाव कम करके पर्यावरणीय समस्याओं का निराकरण अत्यावश्यक है।

Keywords: जनसंख्या, कृषि, विकास, दबाव, पर्यावरण।

प्रस्तावना

भारत जैसे तीव्र विकास की ओर अग्रसर देश में जनसंख्या वृद्धि के साथ तीव्र गति से होता कृषि विकास और इस सम्पूर्ण विकास से स्थानीय तथा क्षेत्रीय स्तर पर पर्यावरणीय समस्याओं का उत्पन्न होना स्वभाविक प्रक्रिया है। भारत गांव का देश है जिसके तीन चौथाई से अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जिसका मूल व्यवसाय कृषि एवं कृषि आधारित उद्योग भी है। देश में यद्यपि प्राचीन काल से ही जनसंख्या में स्वाभाविक रूप से वृद्धि हुई है। परन्तु स्वातंत्र्योपरांत जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई है। पूरे विश्व की जनसंख्या सन 1830 तक मात्र 1 अरब थी जोकि अगले शतक में अर्थात् 1930 तक दोगुनी हो गयी। इसके बाद जनसंख्या में वृद्धि दर तेजी से होकर अगली 1 अरब

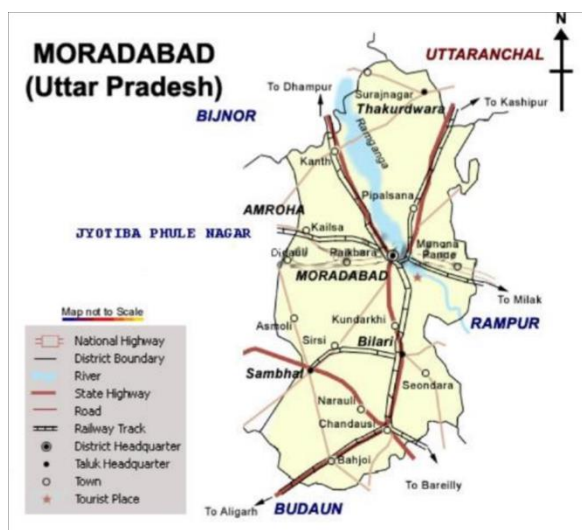
की वृद्धि मात्र 30 वर्षों में अर्थात् 1960 तक हो गयी। 11 जुलाई 1987 को विश्व में 5 अरब वें शिशु का जन्म यूगोस्लाविया में हुआ। इसलिए इस दिन को विश्व जनसंख्या दिवस के रूप में मनाते हैं। विश्व में चीन और भारत दो देश ही ऐसे हैं जिनकी जनसंख्या एक अरब को पार कर चुकी है।

अध्ययन क्षेत्र

भौगोलिक दृष्टि से जनपद मुरादाबाद ऊपरी रामगंगा एवं गंगा दोआब में स्थित रुहेलखण्ड मैदान का भाग है। गंगा-रामगंगा दोआब में विस्तृत यह जनपद पश्चिमी उत्तरी प्रदेश का महत्वपूर्ण क्षेत्र है। जनपद मुरादाबाद का अक्षांशीय विस्तार 28° 21' से 28° 16' उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तर विस्तार 78° 41' से 79° 0' पूर्वी देशान्तर हैं। उत्तर पश्चिम में जनपद बिजनौर, पश्चिम में अमरोहा, दक्षिण में सम्भल, पूर्व में रामपुर तथा उत्तर एवं उत्तर-पूर्व में

रामपुर एवं ऊधमसिंह नगर जनपदों की सीमाओं से आवृत्त जनपद मुरादाबाद का कुल क्षेत्रफल 2208 वर्ग किलोमीटर हैं। जनपद में 4 तहसील (ठाकुरद्वारा, कांठ, मुरादाबाद, बिलारी), 8 विकासखण्ड (ठाकुरद्वारा, डिलारी, छजलैट, भगतपुर टांडा, मुरादाबाद, मूढापाण्डेय, डींगरपुर, बिलारी), 643 ग्राम पंचायतें, 960 आबाद ग्राम तथा 201 गैर आबाद गांव हैं।

जनपद की 2011 की जनगणना अनुसार कुल



जनसंख्या 3126507 है। जिसमें 1637035 पुरुष तथा 1489472 स्त्री हैं। क्षेत्र की कुल साक्षरता दर 60.54 प्रतिशत है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं—

- 1— जनपद मुरादाबाद के भौतिक स्वरूप का सूक्ष्म अध्ययन करना।
- 2— जनपद मुरादाबाद के जनांकिकीय तत्वों का सूक्ष्म अध्ययन करना।
- 3— जनांकिकीय तत्वों में जनसंख्या वृद्धि, घनत्व तथा साक्षरता का अध्ययन करना।
- 4— जनपद मुरादाबाद की रीढ़ कृषि के प्रमुख पक्ष भूमि उपयोग का अध्ययन करना।

5— अध्ययन क्षेत्र की भूमि को कृषित, अकृषित तथा कृष्य भूमि में बांटकर अध्ययन करना।

6— अध्ययन क्षेत्र में कृषि संसाधनों पर जनसंख्या वृद्धि के प्रभावों की विवेचना करना।

7— अध्ययन क्षेत्र में कृषि एवं जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं की विवेचना करना।

8— अध्ययन क्षेत्र में कृषि एवं जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के उपाय प्रस्तुत करना।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र में जनपद मुरादाबाद में जनसंख्या वृद्धि, कृषि विकास एवं उसका पर्यावरण पर प्रभाव— एक भौगोलिक अध्ययन के लिए प्रादेशिक एवं क्रमबद्ध दोनों विधियों का प्रयोग किया गया है। विधितंत्र की दृष्टि से प्रादेशीकरण में भूगोलवेत्ताओं तथा समाजशास्त्रीयों द्वारा प्रयुक्त प्राणाली को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है। शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ही स्तरों से प्राप्त सूचनाओं जिसमें प्रकाशित एवं अप्रकाशित आंकड़े सम्मिलित हैं, का प्रयोग किया गया है। विभिन्न प्रकार की सरकारी रिपोर्ट, गजेटियर्स, पत्रिकाओं, ग्रंथों, जनगणना रिपोर्ट आदि के विश्वसनीय आंकड़ों एवं सूचनाओं का संकलन किया गया है। जिन कर प्राप्ति हेतु जहां अनेक प्रयास करने पड़े हैं वहीं संदिग्धता की स्थिति में स्वविवेक एवं स्वयं सर्वेक्षण का सहारा लिया गया है। एक ही तथ्य के विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों में यदाकदा अन्तर की स्थिति आने पर अपेक्षाकृत अधिक विश्वनीय स्रोतों से आंकड़ों को आधार माना गया है।

भू-आकृति स्वरूप

भू-आकृति स्वरूप की दृष्टि से मुरादाबाद जनपद एक समतल मैदानी भाग है।² जो सामान्यतः जलोढ़ मिट्टियों के निक्षेपण से निर्मित होने पर भी अपने प्राकृतिक, प्रवाह-तंत्र के मार्ग तथा विशेषताओं के परिणामस्वरूप कुछ क्षेत्रीय विषमतायें प्रस्तुत करता है। डडले स्टाम्प (1967)³, ओ.एच. के स्पेट (1951)⁴ आदि विद्वानों ने रामगंगा दोआब क्षेत्र को 'पश्चिमी रुहेलखण्ड' या मुरादाबाद का मैदान से सम्बोधित किया है। मुरादाबाद जनपद का अधिकांश भाग पश्चिमी रुहेलखण्ड का मध्यवर्ती भाग है, जो कुछ अपवाहों को छोड़कर प्रायः समतल भू-भाग है। इस मैदान का ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व को है, अर्थात् इस मैदानी क्षेत्र का ढाल उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व को 60 से 85 सेंटीमीटर प्रति किलोमीटर की दर से क्रमशः कम होता जाता है। इस मैदानी क्षेत्र की औसत ऊँचाई 198 मीटर है।⁵ परन्तु छजलैट, अगवानपुर में इसकी ऊँचाई क्रमशः 221 तथा 209 मीटर हैं। ठाकुरद्वारा-डिलारी क्षेत्र लगभग 222 से 228 मीटर ऊँचा है जबकि मूढापाण्डे, डींगरपुर क्षेत्र मात्र 178 से 189 मीटर ऊँचा है।⁶

मुरादाबाद जनपद का उत्तर मध्य भाग अपेक्षाकृत निम्न भू-क्षेत्र हैं, जहाँ वर्षाकाल में बड़े क्षेत्र पर बाढ़ का जल फैल जाता है, जबकि दक्षिण का क्षेत्र अपेक्षाकृत ऊँचा होने के कारण बाढ़ प्रभावित नहीं है। मुरादाबाद जनपद को भू आकृतिक स्वरूप की दृष्टि से निम्नलिखित 6 भागों में विभाजित किया जा सकता है—

1. कोसी-बहना नदी खादर क्षेत्र।
2. ढेहला-रामगंगा दोआब निम्न भूमि क्षेत्र।
3. रामगंगा खादर क्षेत्र।
4. गांगन अरिल दोआब उच्च भूमि क्षेत्र।
5. अरिल सोत उदला भूमि क्षेत्र।
6. दक्षिण-पश्चिम भूड एवं उच्च भूमि क्षेत्र।

अध्ययन क्षेत्र जनपद मुरादाबाद की मिट्टियों का निर्माण नवीन कल्प में नदियों द्वारा बहाकर लाये गये अपसादों के निक्षेपण से हुआ है। जिन्हें मुख्य रूप से दो वर्गों में रखा जा सकता है—

- 1— खादर क्षेत्र की मिट्टियाँ— (प) शुद्ध बलुई मिट्टी, (पप) शिल्ट युक्त बलुई मिट्टी
- 2— बांगर क्षेत्र की मिट्टियाँ— (प) बलुई दोमट मिट्टी, (पप) दोमट मिट्टी, (पपप) चीका दोमट मिट्टी (पअ) ऊसर मिट्टी

जनपद मुरादाबाद की जलवायु मृदु मानसूनी है जिसमें गर्मियों में तीव्र गर्मी और जाड़ों में अधिक ठण्ड पड़ती है। वर्षा की मात्रा सामान्य है तथा तापमान ग्रीष्मकाल में 400 से अधिक जाड़ों में 50 से कम तथा वर्षा सामान्यतः 100 से.मी. के आस-पास होती है। जलवायु के विविध अध्ययन हेतु क्षेत्र को उष्ण ग्रीष्मकाल, आर्द्रग्रीष्मकाल या वर्षा ऋतु, शरदकाल तथा शीतकाल में बाँट सकते हैं। क्षेत्र में स्थानीय तथा क्षेत्रीय स्तर पर भौतिक कारकों में विभेद दर्शनीय है।

जनसंख्या स्वरूप

मानव संसाधन का विस्तृत अध्ययन क्षेत्र की महती आवश्यकता है। क्षेत्र के कृषि, सामाजिक एवं

आर्थिक विकास में इसकी महत्वपूर्ण एवं प्रत्यक्ष भूमिका है। जनपद मुरादाबाद की जनसंख्या वृद्धि की सारिणी संख्या-1 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि जनपद में सन् 1911 से 21 के दशक में जनसंख्या बढ़ने के स्थान पर घटी है इसका मुख्य कारण जनसुविधाओं की कमी के साथ-साथ क्षेत्र में फैले संक्रामक रोग जैसे— चेचक, प्लेग आदि महामारी के रूप से रहे हैं। इस मध्य जनसंख्या वृद्धि दर 5.11 प्रतिशत रही। सन् 1921-31 के दशक में जनसंख्या की वृद्धि +7.12 प्रतिशत रही है। इससे स्पष्ट है कि क्षेत्र इस दशक में पुनः सामान्य स्थिति में आ गया लेकिन 1901 की जनसंख्या से कम ही रही थी। सन् 1931-41 के दशक में वृद्धि +14.72 प्रतिशत हुयी, जिसका कारण क्षेत्र में जनसुविधाओं में वृद्धि, मृत्युदर में कमी तथा जन्म दर में वृद्धि होना बताया जाता है। सन् 1941-51 के दशक में जनसंख्या में अपेक्षित पिछले दशक से कम वृद्धि +12.75 प्रतिशत हुयी थी। इसका मुख्य कारण अंग्रेजों का अत्याचार एवं क्षेत्रवासियों की स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी रही है।

स्वतन्त्रता के पश्चात सन् 1951 से 2011 के मध्य जनपद मुरादाबाद में जनसंख्या की वृद्धि तीव्र अति तीव्र होती चली गयी, जो सन् 1951-61 में वृद्धि +19.73 प्रतिशत, 1961-71 में +23.06 प्रतिशत, 1971-81 में +29.66 प्रतिशत, 1981-91 में -5.84 प्रतिशत रही, इस ऋणात्मक वृद्धि दर का मुख्य कारण जनपद मुरादाबाद से अमरोहा जनपद का अलग होना है जो कि सन् 1991-2001 के दशक -10.76 प्रतिशत हो गयी। इस ऋणात्मक वृद्धि दर का मुख्य कारण अध्ययन क्षेत्र से सम्भल

जनपद का अलग होना है तथा 2001 से 2011 के मध्य अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या वृद्धि दर +26.67 प्रतिशत रही है। इसका मुख्य कारण जनसुविधाओं एवं स्वास्थ्य व्यवस्था में क्रमशः वृद्धि, मृत्यु दर में कमी तथा जन्म दर में वृद्धि का होना रहा है। इसके साथ ही कृषि, औद्योगिक एवं आर्थिक विकास का होना भी सहायक है।

सारिणी संख्या-1

जनपद मुरादाबाद : जनसंख्या वृद्धि

वर्ष	जनसंख्या	वृद्धि (प्रतिशत में)
1901	1183342	—
1911	1253732	+5.95
1921	1189639	-5.11
1931	1274360	+7.12
1941	1461971	+14.72
1951	1648356	+12.75
1961	1973715	+19.73
1971	2428971	+23.06
1981	3149406	+29.66
1991	2965293	-5.84
2001	2468127	-10.76
2011	3126507	+26.67

स्रोत— सांख्यिकीय पत्रिका जनपद मुरादाबाद 2023 एवं जनगणना कार्यालय जिला राजकीय सूचना विज्ञान केन्द्र मुरादाबाद।

क्षेत्र में जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व में भी अत्यधिक विभेद दर्शनीय है। क्षेत्र में 1901 से 2011 के जनसंख्या घनत्व के आंकड़े इसके स्पष्ट

उदाहरण है। 1901 में क्षेत्र का जनसंख्या घनत्व 198 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. था जो 2011 में बढ़कर 1416 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. हो गया।

जनपद मुरादाबाद के जनांकिकीय आंकड़ों का यदि हम सूक्ष्म अध्ययन करें तो हम पाते हैं कि क्षेत्र में साक्षरता के प्रतिशत में अत्यधिक विभेद देखने को मिलता है क्षेत्र में 1991 से 2011 के मध्य साक्षरता का प्रतिशत बढ़ा है परन्तु परिणाम सन्तोषजनक नहीं कहे जा सकते। क्षेत्र में कुल साक्षरता का प्रतिशत 60.54 प्रतिशत ही है।

कृषि पर्यावरण

जनपद मुरादाबाद जैसा कि विदित ही है एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में भूमि उपयोग का अध्ययन महत्वपूर्ण है। जनपद मुरादाबाद में कुल भूमि का 79.03 प्रतिशत भाग कृषित है। इसके अतिरिक्त 15.27 प्रतिशत अकृषित कार्यो, 0.02 प्रतिशत पर वन, 1.53 प्रतिशत भू-भाग परती, 2.57 प्रतिशत पर कृष्य बेकार भूमि है। शेष भूमि में उद्यान, चारागाह और कृषि योग्य बंजर भूमि सम्मिलित है। सिंचन सुविधाओं के विकास के कारण जनपद मुरादाबाद का 83.24 प्रतिशत भाग दो फसली है। जिसे सारिणी संख्या -2 में स्पष्ट देखा जा सकता है।

सारिणी संख्या-2

जनपद मुरादाबाद : भूमि उपयोग (2021-22)

क्र०सं०	भूमि उपयोग	क्षेत्रफल (हैक्टेयर में)	प्रतिशत
1	वन	64	0.02
2	कृष्य बेकार भूमि	5535	2.57
3	परती भूमि	3379	1.53
4	कृषि के अतिरिक्त	33607	15.27

	अन्य उपयोग की भूमि		
5	चारागाह एवं उद्यान	1889	0.85
6	ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि	1674	0.76
7	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	174177	79.03
8	एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र	183404	83.24

स्रोत- सांख्यिकीय पत्रिका जनपद मुरादाबाद 2023, तालिका-17

अध्ययन क्षेत्र के भूमि उपयोग में विकासखण्ड स्तर पर अनेकानेक विभिन्नतायें विद्यमान हैं। विकासखण्ड स्तर पर सर्वाधिक कृषित भूमि 83.98 प्रतिशत छजलैट विकासखण्ड में तथा सबसे कम 76.68 प्रतिशत भूमि मुरादाबाद विकासखण्ड में है। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक कृष्य भूमि 9.15 प्रतिशत मूढापाण्डे विकासखण्ड में जबकि सबसे कम कृष्य भूमि 3.37 प्रतिशत ठाकुरद्वारा विकासखण्ड में है। जनपद मुरादाबाद में सर्वाधिक अकृषित भूमि 17.48 प्रतिशत डींगरपुर विकासखण्ड में जबकि सबसे कम अकृषित भूमि 12.19 प्रतिशत छजलैट विकासखण्ड में है जिसे सारिणी संख्या-3 में स्पष्ट देखा जा सकता है।

सारिणी संख्या-3

जनपद मुरादाबाद : विकासखण्डवार भूमि उपयोग प्रतिशत में (2021-22)

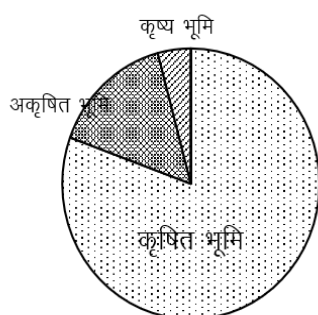
क्र०सं०	विकासखण्ड	कृषित भूमि	कृष्य भूमि
1	ठाकुरद्वारा	81.41	3.37

2	डिलारी	83.30	3.43	13.27
3	छजलैट	83.98	3.83	12.19
4	भगतपुर टांडा	79.69	7.02	13.29
5	मुरादाबाद	76.68	7.53	15.79
6	मूढापाण्डे	77.55	9.15	13.30
7	डींगरपुर	78.54	3.98	17.48
8	बिलारी	82.97	3.78	13.32
	योग जनपद		80.56	4.15
			15.29	

स्रोत— सांख्यिकीय पत्रिका जनपद मुरादाबाद 2023, तालिका-17 से संकलित

जनपद मुरादाबाद : भूमि उपयोग

जनपद मुरादाबाद में भूमि उपयोग में कृषित तथा कृषित क्षेत्र में शस्य प्रतिरूप का अध्ययन अत्यधिक महत्वपूर्ण है। जनपद मुरादाबाद में शस्य प्रतिरूप में अत्यधिक विविधता दर्शनीय है। कुल कृषित भूमि का 85 प्रतिशत खाद्यान्न फसलों के अन्तर्गत आता है। जिसमें गेहूँ, चावल आदि प्रमुख फसलें हैं। इसके अतिरिक्त बाजरा, ज्वार, दलहन, तिलहन, चारा, आलू, गन्ना, मैथा आदि फसलें भी क्षेत्रीय आवश्यकताओं तथा व्यापारिक दृष्टिकोण से बोई जाती है।



अध्ययन क्षेत्र में कृषि विकास एवं जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उक्त अध्ययन के बिना यह अध्ययन महत्वहीन है।

अध्ययन क्षेत्र के आंकड़ों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि क्षेत्र में कृषि भूमि पर जनसंख्या वृद्धि का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है। जिस अनुपात में कृषि भूमि विस्तार नहीं हो पाता है इससे क्षेत्र में कृषि घनत्व में निरन्तर वृद्धि हुई है। इसके साथ ही जनपद मुरादाबाद में जहाँ कृषि घनत्व में वृद्धि हुई है। जनपद मुरादाबाद का कृषि घनत्व 179 व्यक्ति है। वहीं क्षेत्र में कुल फसलों का प्रति हेक्टेयर उत्पादन तो बढ़ा है साथ ही कुछ फसलें या तो अब क्षेत्र में बोई नहीं जाती अथवा इन फसलों का प्रति हेक्टेयर उत्पादन में 4 गुना से लेकर 8 गुना तक वृद्धि हुई है। दलहन एवं तिलहनों के उत्पादन में अधिक वृद्धि नहीं हुई है। जनपद मुरादाबाद में कृषि उत्पादन एवं जनसंख्या वृद्धि के आधार पर खाद्यान्न उपलब्धता का अध्ययन करें तो जनसंख्या वृद्धि से आज भी खाद्यान्न उपलब्धता की स्थिति में कोई विशेष अन्तर नहीं आया है आज भी देश के 20 प्रतिशत परिवारों को भरपूर मात्रा में खाद्यान्न उपलब्ध नहीं है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि विकास के साथ-साथ जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि होने से आज भी जनसंख्या के दबाव की स्थिति बनी हुई है। जनपद मुरादाबाद में कुल जनसंख्या और प्राप्त कुल संसाधनों के आधार पर जनसंख्या दबाव की स्थिति का आंकलन करना होगा इस स्थिति में क्षेत्र में स्थान-स्थान तथा विभिन्न स्तरों पर असमानता देखने को मिलती है।

अध्ययन क्षेत्र में कृष्याधारित उद्योगों की अत्यधिक कमी है। जिससे कृषि में संलग्न जनसंख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। दूसरे कृषि यह प्रति एकड़ पैदवार की लागत बढ़ने से क्षेत्रीय

किसानों के लिए कृषि फायदे का सौदा नहीं रह गई है। अतः क्षेत्र में स्थानीय उपभोक्ता वस्तुओं को ध्यान में रखकर तथा देश एवं विदेशों को नियति हेतु वृहद, लघु एवं कटीर उद्योगों का विस्तार किया जाना चाहिए। जिससे क्षेत्र में बेरोजगारी मिटेगी और खुशहाली आयेगी साथ ही अध्ययन क्षेत्र में नगरों की ओर से हो रहा पलायन भी रुकेगा। इन उद्योगों का विकास करते समय क्षेत्र के उद्योगों के विकेन्द्रीकरण की नीति को प्रभावी ढंग से लागू करना आवश्यक है। इसके साथ ही कृषि उत्पादों के लिये संगठित विपणन तंत्र की आवश्यकता है। अध्ययन क्षेत्र के गरीब किसानों के लिए विभिन्न रोजगार के साधनों को चलाने हेतु बैंक तथा समाजसेवी संस्थाओं को ऋण उपलब्ध कराना होगा परन्तु भ्रष्टाचार राजनीति तथा लालफीताशाही के कारण छोटे तथा जरूरतमंदों की कृषि योजनायें असफल हो रही हैं।

अध्ययन क्षेत्र जनपद मुरादाबाद में कृषि पर जनसंख्या का दबाव कम करने हेतु अध्ययन क्षेत्र में पशु पालन एक उपयोगी संसाधन है जिससे न केवल कृषि में सहयोग लिया जा सकता है साथ ही क्षेत्रीय नागरिकों को दुग्ध और दुग्ध समिति बनाकर क्षेत्रीय लोगों को रोजगार उपलब्ध करा कर उनको आर्थिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र में यद्यपि डेयरी उद्योग का तीव्र गति से विस्तार हो रहा है परन्तु संगठित बाजार तंत्र तथा अच्छी नस्ल के पशुओं के अभाव में तथा सरकारी सहायता एवं मार्ग दर्शन के बिना यह उद्योग अभी नहीं पनप रहा है। अतः क्षेत्रीय किसानों को इस ओर अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

जनपद मुरादाबाद में कृषि पर जनसंख्या के दबाव के फलस्वरूप अनेकानेक समस्याएँ पैदा हुई हैं। जिनमें पर्यावरणीय समस्याएँ प्रमुख हैं, जनपद मुरादाबाद में कृषि भूमि पर जनसंख्या का दबाव निरन्तर बढ़ा है। जिससे न केवल मानव के समक्ष उदरपूर्ति की समस्या बढ़ी है। वरन् भूमि उपयोग में कृषि की सघनता के कारण वनों के विनाश, दो फसली क्षेत्रों में वृद्धि, सिंचाई की सुविधाओं में वृद्धि, परती भूमि के विनाश से जल स्तर में गिरावट, जल प्रदूषण में वृद्धि, भूमि की प्राकृतिक उर्वरता में कमी, ऊसर एवं बंजर भूमि का बढ़ाव, क्षेत्रीय कृषकों पर बढ़ता ऋणों का बोझ, जनसंख्या वृद्धि से बढ़ता पर्यावरण संकट, आर्थिक विषमताओं की बढ़ती हुई खाई, बाढ़ एवं सूखा की विशीषिका, खाद्यान्न उत्पादन की घटती हुई दर, प्रति व्यक्ति घटता कैलारी स्तर के निरन्तर उपयोग से विषाक्त होते जल एवं मिट्टी के स्रोत प्राकृतिक जल स्रोतों का प्रदूषित होना आदि प्रमुख पर्यावरणीय एवं क्षेत्रीय समस्याएँ हैं। यदि समय रहते इन समस्याओं का निराकरण नहीं किया गया तो जनपद मुरादाबाद में कृषि के विकास से अनेकानेक समस्याएँ पैदा हो जायेगी। इन समस्याओं के निराकरण हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत किये हैं :-

1. मुरादाबाद में तीव्र गति से बढ़ रही जनसंख्या की वृद्धि को आवश्यक रूप से रोका जाये। इस हेतु सरकार को शिक्षा एवं साक्षरता का स्तर बढ़ाकर तथा प्रशासनिक दृढ़ता के साथ चीन की भांति 'टू-इन-वन' के फार्मूला को लागू करना होगा।
2. परिवार कल्याण कार्यक्रमों को कागजों तक सीमित न रखकर उन्हें प्रभावी बनाना होगा।

3. मुरादाबाद में बढ़ती जनसंख्या से कृषि संसाधनों पर जनसंख्या का दबाव बढ़ रहा है। जनपद मुरादाबाद में रोजगार के वैकल्पिक साधनों को बढ़ाकर इस कृषि दबाव को कम किया जा सकता है।

अन्त में कहा जा सकता है कि जनपद मुरादाबाद में व्यापक रूप से प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों की उपलब्धता के उपरान्त भी क्षेत्र में दुख दारिद्र्य, वर्ग संघर्ष, असंतोष, पीड़ा एवं क्षेत्रीय तथा अन्य आर्थिक सामाजिक विशेष रूप से कृषि एवं जनांकिकीय विषमतायें विद्यमान हैं। इस हेतु प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों का सम्यक विकास करना होगा। प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन करते समय कृषि एवं जनसंख्या विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय समस्याओं पर भी ध्यान देना होगा। यदि इन पर्यावरणीय समस्याओं पर विकास के चलते हमने ध्यान न दिया तो वह दिन दूर नहीं जब हम विकास के चलते अन्यानेक पर्यावरणीय समस्याओं को बढ़ाते जायेंगे और विकास के स्थान पर हर क्षेत्र में विनाश ज्यादा होगा।

संदर्भ:

- 1—सांख्यिकीय पत्रिका जनपद मुरादाबाद 2023 से संकलित।
- 2— उत्तर प्रदेश डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स मुरादाबाद 1968 पृष्ठ संख्या 26।
- 3— स्टांप, एल0 डी0: एशिया ए रीजनल एंड इकोनोमिक ज्योग्राफी मैथ्यून एंड कम्पनी लिमिटेड, लंदन 1967 पृष्ठ संख्या— 278
- 4— स्पेट, ओ0एच0के0 : इण्डिया एंड पाकिस्तान, ए जनरल एंड रीजनल ज्योग्राफी मैथ्यून एंड कम्पनी लिमिटेड, लंदन 1951 पृष्ठ संख्या—331 से 341।

5—उत्तर प्रदेश डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स मुरादाबाद 1968 पृष्ठ संख्या 27।

6— सिंह, यू0 एंड वर्मा, आर0बी0 : इण्डिया ए रीजनल ज्योग्राफी एडिट, वाई0 आर0 एल0 सिंह. 1971 पृष्ठ संख्या— 177